NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में लघु कुटीर उद्योगो का महत्व

डा0 दीपाली चौहान

परिचय:

लघु उद्योग देश के आर्थिक, सामाजिक एवं औद्यौगिक विकास के लिए सफलता की कुंजी है। क्योंकि लघु उद्योग द्वारा रोजगार के अवसर प्राप्त होते है और साथ ही साथ दैनिक प्रयोग की हजारों वस्तुओं का उत्पादन आर्थिक दृष्टि से कम कीमत पर किया जा सकता है। राष्ट्रीय आय की वृद्धि में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

भारत जैसे विकासशील देश में, जहां का औद्यौगिकरण अभी निम्न स्तर पर है और बढ़ती हुई जनसंख्या बेरोजगारी इत्यादि के दृष्परिणाम दृष्टिगोचर है, लघू उद्योगों का विकास बहुत आवश्यक है।

भारत सरकार के उद्योग विभाग द्वारा लघु उद्योगा की परिभाषा निम्न है– ''वह उद्योग जिसमें पूंजी विनियोग 20 लाख रूपये तक हो, लघु उद्योग के अन्तर्गत आता है। इस बात का कोई विचार नहीं है कि उद्योग में कितने व्यक्ति कार्यरत हैं और पावर का उपभोग किस और कितने स्तर पर है।''

यदि सभी वस्तुएं मशीनीकरण एवं वृहत क्षेत्रों में बनायी जाएं तो बहुत कम उद्यमी इस स्थिति में होंगे कि इतनी ज्यादा पूंजी निवेश जुटा पायें। यदि सफल हो भी गए तो केवल छोटी–छोटी दैनिक उपयोग की वस्तुओं को तकनीकी में ही समय व्यर्थ चला जायेगा और तकनीकी विकास, अनुसंधान एवं अन्ल्य बहुत से महत्यपूर्ण उत्पादन रह जायेगें।

लघु उद्योग का चुनाव :–

सही उद्योग का चुनाव करने के लिए निम्न घटकों का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।

1. उद्योग का चुनाव करते समय सर्वप्रथम यह जान लेना आवश्यक है कि जिस उद्योग की उद्यमी लगाना चाहता है वह क्या है, कितना इसमें पूंजी निवेश है।
2. वस्तु बनाने के लिए तकनीकी ज्ञान।
3. कच्चे माल का प्रकार एवं उपलब्धि।
4. पक्के माल का बाजार तथा बिक्री साधन।
5. उद्योग ऐसी जगह लगाया जाए जहां पर या तो कच्चा माल उपलब्ध हो या वहाँ पर पक्के माल की बिक्री का बाजार हो।
6. विभिन्न सरकारी सुविधाओं की जानकारी।

मोमबत्ती उद्योग :–

मोमबत्ती उद्योग एक ऐसा उद्योग है जिसको कि बहत कम लागत में लगाया जा सकता है व इसमें पूंजी के डूबने का खतरा इत्यादि बिल्कुल न के बराबर होता है।

कच्चा माल :– पैराफिन वैक्स या मोम, स्टीयरिक ऐसिडछ व सूत की बत्ती।

डा0 दीपाली चौहान

वैज्ञानिक (गृह विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, रायबरेली

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर

नोटः–

स्टीयरिक एसिड मोम में मिलाने से मोमबत्ती जलाते समय ठंडी नहीं पड़ती और उसकी लौ में एक विशेष चमक भी आ जाती है।

मोमबत्ती बनाने की विधि :–

मोमबत्ती बनाने के लिए सांचो का प्रयोग किया जाता है। जिस वनज व साइज की मोमबत्ती बनानी होती है उसी साइज का सांचा तैयार कराया जाता है। एल्यूमीनियम के सांचे से मोमबत्ती बनाने के लिए सबसे पहले मोम को एक बर्तन में डालकर आंच पर पिघलने के लिए रख देते है, फिर सांचे में धागा पिरोया जाता है। सांचे में तीन पल्ले होते हैं जो कि एक क्लैम्प की सहायता से एक दूसरे से जकड़े रहते है। क्लैम्पस हटाने पर यह पल्ले अलग हो जात है।

सबसे पहले एक कपड़े की सहायता से इन सांचो में तेल चुपड़ा जाता है ताकि मोमबत्ती आसानी से छूट सके। सांचे के बीच के पल्ले के ऊपर लोहे की पत्ती लगी रहती है जिसमें कि छोट–छोटे सांचे कटे रहते है इन्हीं सांचो में मोमबत्ती की नोक की सीध में खांचा कटा रहता है। इन्हीं खांचों में धागे को फंसा कर पूरे सांचे में पिरोते है। व क्लैंम्प की सहायता से सांचे के पलड़ों को ढंग से कस देते है तत्पश्चात् पिघला हुआ मोम इस सांचे में सांचे की गहरायी तक भर दिया जाता है। अब मोम से भरे सांचे का उठाकर पानी से भरे टब में डूबा देते है जिससे मोम जमने लगता है, फिर थोड़ी देर बात जब मोम जम जाता है तो क्लैम्प हटाकर सांचे को खोलते है और बनी हुई मोमबत्तियों को निकालने के लिए एक तेज धार वाले चाकू या ब्लेड की सहायता से धागों को दोनो तरफ से काट दिया जाता है तथा शीघ्र ही मोमबत्तियां बाहर निकाल ली जाती है।

अगरबत्ती बनाने का उद्योग :–

अगरबत्ती का उपयोग प्रतिदिन पूजापाठ के समय होता है। कोई व्यक्ति किसी भी धर्म या सम्प्रदाय का क्यों न हो, अगरबत्तियों का प्रयोग जरूर करता देखा जा सकता है। यह एक ऐसा उद्योग है जिसकों बहुत कम पूंजी से शुरू किया जा सकता है।

भवन व भूमि :– 10 X 10 नाम का कमरा पर्याप्त होता है।

कच्चा माल :–

अगरबत्ती बनाने में लगने वाले विभिन्न कच्चे मालों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। लकड़ियां (अगर चन्दन), जड़े (खस, कपूर, कचरी आदि) छाले (दालचीनी, तेजपात आदि) पत्तियां (देवदार, अचौली मरजोरम), फूल (गुलाब, लौंग, चम्पा) बीज (इलायची, जावित्री) गोंद व रेजिन (लोभान, शिलाजीत), अन्य (वुड गम, मैदा, लकड़ी, शोरा, लकड़ी का कोयला रंग व सुगन्ध इत्यादि)

मसाला तैयार करने का फार्मूला :–

चन्दन की लकड़ी 25 प्रतिशत, काली अगर 20 प्रतिशत, खस 5 प्रतिशत, कपूरकचरी 5 प्रतिशत, फूल व पत्तियां 10 प्रतिशत, लोभान 20 प्रतिशत, लकड़ी का कोयला व अन्य पदार्थ 15 प्रतिशत।

अगरबत्तियां बनाने की विधि :–

अगरबत्तियां बनाने के लिये सर्वप्रथम अगरबत्तियां बनाने के लिए मसाला तैयार करने के लिए इसमें डाले जाने विभिन्न अवयवों की मात्रा निश्चित अनुपात में

मिलाकर आटे की तरह गूंध लिया जाता है। इस गुधें हुए मिश्रण को एक झुकावदार डेस्क पर या इसी प्रकार के आगे की तरफ ढलवां चौकी पर फैला लिया जाता है। फिर पहले से कटी रखी तीलियों के टुठे को हाथ में लेकर ऊपर से नीचे की तरफ ढलवाँ तल पर फैले मसाले पर रगढ़ते हैं जिनके फलस्वरूप इन तीलियों पर एकसार मसाला चढ़ जाता है। इस प्रकार मसाला चढ़ी इन तीलियों को धूप में रखकर सुखा लिया जाता है। इन सूखी हुई अगरबत्तियों को डिब्बों में या थैलियों में रख कर बेचा जाता है। हमारे देश में सस्ते किस्म की अगरबत्तियों का प्रयोग काफी प्रचलित है। सस्ते किस्म की अगरबत्तियां बनाने में लकड़ी के कोयले का बुरादा या सस्ते किस्म की चन्दन की लकड़ी का प्रयोग किया जाता है।

बढ़िया किस्म की अगरबत्ती बनाने का एक फार्मूला निम्न प्रकार से है:–

लकड़ी का कोयला	**100 ग्राम**
राल	100 ग्राम
सफेद चन्दन का बुरादा	100 ग्राम
गुगल	100 ग्राम

दियासलाई उद्योग

दियासलाई एक दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तु है। किसी भी व्यक्ति के लिए यह कोई नई चीज नहीं है। इसके प्रकार एवं प्रयोग काफी लोकप्रिय है। सर्वविदित है कि इसका प्रयोग आग जलाने के लिये ही किया जाता है।

दियासलाई उद्योग कुटीर उद्योग के रूप में पहचाना जाता है हालांकि कुछ उद्योग बड़े स्तर पर भी इस क्षेत्र में कार्यरत हैं परन्तु इस उद्योग को कुटीर या लघु स्तर की श्रेणी पर ही रखा गया है।

कच्चा माल :–

दियासलाई उत्पादनल के लिए निम्नलिखित कच्चे माल की आवश्यकता पड़ती है।

1. मुलायम लकड़ी या बांस की तीलियां
2. कार्ड बोर्ड के वीनियर
3. ब्लू मैच पेपर

कैमिकल्स :–

1. पोटेश्यिम क्लोरेट
2. गन्धक
3. ब्लैक आक्साइड ऑफ आयरन
4. मैंगजीन डाई ऑक्साइड
5. रैड फॉस्फोरस
6. पैराफिन वैक्स
7. अन्य कई रसायन

ग्लू:–

कार्ड बोर्ड के वीनियर के स्थान पर बांस के बने वीनियर भी लाए जा सकते है। यदि 25 ग्रत दियासलाई प्रतिदिन बनाई जाये तो निम्नलिखित कच्चे माल की मासिक आधार पर आवश्यकता पड़ेगी।

1. ग्लू या चिपकाने वाले अन्य पदार्थ – 15 कि0
2. आयरन ऑक्साइड – 17 कि0
3. मैगनीज डाईऑक्साइड – 15 कि0
4. पोटैशियम क्लोरेट – 75 कि0
5. सल्फर – 20 कि0
6. बाईक्रोमेट – 1 कि0
7. बिरोजा – 1 कि0
8. रैड फॉस्फोरस – 5 कि0
9. ऐन्टीननी सल्फाइड – 1 कि0
10. रंग – 1 कि0
11. पैराफिन वैक्स – 120 कि0

12. टैपिओका या आरारोट – 35 कि0
13. तीलियां – 100 कि0
14. नीला कागज – 10 रिम
15. क्रॉफ्ट पेपर – 1 रिम
16. ओसीन क्रॉफ्ट – 2 रोल
17. बीनियर – 700 ग्रुस
18. कॉपर सल्फेट – 1 कि0
19. लेबिलस – 1 लाख

दियासलाई के उत्पादन की पूर्ण प्रक्रिया का कार्य विभाजन हम निम्न प्रकार से कर सकते है।

1. बांस की तीलिया बनाना।
2. तीलियां की सतह के रेश जलाना।
3. तीलियां को बण्डलों मं बांधना तथा झुलसाना।
4. मोम चढ़ाना।
5. टिप कम्पोजिशन बनाना।
6. साइड कम्पोजिशन बनाना।
7. खाली डिब्यॉ पैकिंग हेतु तैयार करना।

8- डिब्बी में तीलियां गिन कर भरना।
9- लेबलिंग व पैकिंग करना इत्यादि।